।। ओ३म् ।।

बाइबल के अभद्रोपदेश

(संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)



पशून् पाहि ।। पशुओं की रक्षा करो।

अहिंसा परमो धर्मः ।। अहिंसा ही परम धर्म है।

पण्डित वेद प्रकाश शास्त्री

यज्ञ

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म ।।

श्रेष्ठकर्म करना ही सबसे बड़ा यज्ञ है। जो भी व्यक्ति श्रेष्ठ कर्म करता है चाहे वह हिन्दू हो, ईसाई हो, सिक्ख हो, मुसलमान हो, नास्तिक हो, आस्तिक हो, गरीब हो, अमीर हो, स्त्री हो, पुरुष हो, वह यज्ञशील ही कहा जाएगा।

केवल अग्नि में घी की आहुतियां अर्पित करने का नाम ही यज्ञ नहीं, अपितु यज्ञ एक व्यापक त्याग की भावना है। यज्ञ 'अध्वर' अर्थात् हिंसा रहित है। इसीलिए यज्ञ अहिंसा और सौहार्द का प्रतीक है। विद्या, धनादि का दान, सहायता करना, पराए दुःख दूर करना, मन से भी किसी का अशुभ न सोचना यज्ञ है। सत्पुरुषों की संगति द्वारा सबके कल्याणार्थ सद्ज्ञान प्राप्त करना, सद्व्यवहार सीखना भी यज्ञ है । उन्नत शिल्प, उन्नत उद्योग, उन्नत विज्ञान में प्रवृत्त होना भी यज्ञ है यदि उसमें क्षुद्र स्वार्थ की भावना न हो।

यज्ञ केवल साधन ही नहीं अपितु सद्गुण रूपी साध्य भी है। जब तक यज्ञ से मन की भावनाओं का उदारीकरण नहीं होता, तब तक यज्ञ का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण ही नहीं हो सकता। वस्तुतः यज्ञ सर्वकल्याणरूप है।

आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता

उच्च भावनाओं की प्रेरक, आर्य संस्कृति श्रेष्ठ महान्।
इसकी ज्योति चतुर्दिक् फैली, गुण गौरव गरिमा की खान।।
श्रेष्ठ मान्यताएं हैं इसकी, जिनका लक्ष्य विश्व कल्याण।
आत्मा परमात्मा मानव का, निश्चित इसमें सफल विधान।।
एक ईश्वर है जग का कर्ता, जो अजर अमर अविकार।
शुद्ध पवित्र सर्वव्यापक वह, अखिल जगत् का सर्वाधार।।
जीवात्मा है मानव तन में, जो स्वतंत्र करता है कर्म।
किन्तु आर्य संस्कृति कहती है, जन का सच्चा साथी धर्म।।
'सत्यं वद' 'धर्मं चर' का यह, करती है पावन उपदेश।
जीवन के सब क्षेत्रों में हो, संयम इसका लक्ष्य विशेष।।
जैसे कर्म करेगा मानव, वैसे ही फल करता प्राप्त।
लिप्त हो सांसारिक भोगों में, जीवन को मत करो समाप्त।।
आर्य संस्कृति बतलाती है, करो नारियों का सम्मान।
नारी नर की सहयोगी है, अर्द्धांगिनी का किया विधान।।
जग की कितनी संस्कृतियाँ, है नाम शेष, हो गईं समाप्त।
किन्तु आर्य संस्कृति सुगन्ध सी, है हो रही विश्व में व्याप्त।।

आइए, कथनी करनी एक बनाएं

नीतिकार ने अत्यन्त मनोहारी शब्दों में जीवन का सार बता दिया है –

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।
मनस्यन्यद् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम् ।।

महान् पुरुष मन से एक, वचन से एक और कर्म से एक होते हैं अर्थात् जैसा मन से सोचते हैं, वैसा ही वचन बोलते हैं और कार्यरूप में परिणत भी करते हैं। इसके विपरीत पापात्मा मन से कुछ, वचन से कुछ तथा कर्म से कुछ और ही होते हैं अर्थात् ऐसे पुरुष मनसा, वाचा, कर्मणा भिन्न–भिन्न होते हैं।

वाच्यर्था नियताः सर्वे वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः ।
तांस्तु यः स्तेनयेद् वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः ।। मनु.4 / 256

जिस वाणी में सब अर्थ=व्यवहार निश्चित हैं। वाणी ही जिसका मूल है और जिस वाणी से ही सब व्यवहार सिद्ध होते हैं, जो मनुष्य उस वाणी को चोरता अर्थात् मिथ्याभाषण करता है वह जानो सब चोरी आदि पाप ही को करता है, इसलिए मिथ्या भाषण को छोड़ के सदा सत्य भाषण ही किया करें।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयाद् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयाद् एष धर्मः सनातनः ।। मनु.4 / 138

सच बोलो, प्रिय बोलो, अप्रिय (कड़वा) सच न बोलो, प्रिय झूठ न बोलो। यही सनातन धर्म है।

आज कहे कल भजूंगा, कल कहे फिर काल।
आज–काल के करत ही, अवसर जासी चाल।।

मीठे आश्वासन – विश्वास दिलाकर, मन को लिया रिझाय ।
देखो, अब अगल – बगल झांक कर, क्यों रहे सिर पाप चढ़ाय ।।

किसी का काम कर सकते नहीं अगर, कह दो नत नयन मन हर्षाय।
भाई, मेरे वश में यह है नहीं, कहुं और लेहु तुम करवाय ।।



महर्षि दयानन्द उवाच

जो जो सब मतों में सत्य बातें हैं वे वे सब में अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो जो मतमतान्तरों में मिथ्या बाते हैं उन उन का खंडन किया है।

जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ भी वर्तता हूँ।

यह लेख केवल सत्य की वृद्धि और असत्य के ह्रास होने के लिए है, न कि किसी को दुःख देने वा हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के अर्थ है।

जो कोई पक्षपातरूप यानारूढ़ होके देखते हैं, उनको न अपने और न पराए गुण दोष विदित हो सकते हैं।

श्रेष्ठाचरण

यद् यदाचरति श्रेष्ठः तत् तदेवेतरो जनः।

स यत् प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।। गीता 3/21

भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं–

श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी उस उस के अनुसार ही वर्तते हैं। वह पुरुष जो कुछ प्रमाण कर देता है, लोग भी उसके अनुसार वर्तते हैं।

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष को देखकर दूसरे भी वैसा ही आचरण करते हैं। अतः परिवार, समाज और राष्ट्र के श्रेष्ठजनों को अपना आचरण शुद्ध, पवित्र, उज्ज्वल और अनुकरणीय बनाना चाहिए।

वस्तुतः भगवान् श्री कृष्ण ने ऐसा ही किया था।

नारी सम्मान

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।। मनु. 3/56

जिस कुल में स्त्रियों की पूजा अर्थात् सत्कार होता है, उस कुल में मनुष्य विद्यायुक्त अर्थात् विद्वान् होके देववत् आनन्दित होते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता, वहां सब क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं।

देश में ईसाइयत आज भी पूर्ववत् फैल रही है। पिछड़ी जनता में सेवा के नाम पर उन्होंने जो जाल फैलाया है, वह सभी के लिए गंभीर चेतावनी है। समय की मांग है कि हम अज्ञान और अन्धविश्वास पर आधारित ईसाइयत के सत्य स्वरूप को समझ कर इसके विष से देश को बचाने का संकल्प लें।

विषय सूची

भारतीय संस्कृति की सर्वोच्चता

महान् वेदवेत्ता, धर्मशास्त्र के ज्ञाता महर्षि मनु महाराज की अत्यन्त गौरवपूर्ण घोषणा है–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। मनु 2/20

इस आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए अग्रजन्मा अर्थात् वेदवेत्ता विद्वान् ब्राह्मणों से संसार के समस्त मनुष्य अपने – अपने योग्य विद्या, आचार, व्यवहार आदि चरित्रों की शिक्षा ग्रहण करें।

बाइबल के अभद्रोपदेश

1. धर्मशास्त्र का सदुद्देश्य

धर्मशास्त्र सदैव धर्मानुकूल सदाचारण का ही उपदेश करते हैं, अधर्म एवं कदाचरण का नहीं। क्योंकि धर्मशास्त्रों का उद्देश्य मानव का नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक आदि सभी दृष्टिकोणों से सर्वांगीण विकास करना है, न कि अधःपतन की ओर ले जाना।

दर्शन शास्त्र कहता है–

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।। वै. 1/1/2

अर्थात् जिससे लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति हो, वही धर्म है।

परन्तु बाईबल इस कसौटी पर खरी नहीं उतरती। उदाहरणतः –

ईश्वर ने सृष्टि की रचना की। आदम और हव्वा को उत्पन्न किया, परन्तु उन्हें कहा–

बाइबल– "कि तू वाटिका के सब वृक्षों के फल खा सकता है, पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

उत्पत्ति 2/16,17 पृ. 3.

समीक्षा– देखा! यहोवा परमेश्वर ने मानव सृष्टि की रचना तो कर दी पर उन्हें भले बुरे का ज्ञान नहीं दिया, वृक्ष का फल खाने से मना कर दिया जिससे उन्हें ज्ञान न हो सके। इसका अर्थ तो यही हुआ कि ईश्वर उनकी उन्नति नहीं चाहता। सम्भवतः इसलिए कि यदि जनता अज्ञानी होगी तो उसके वश में रहेगी। ज्ञानी हो गई तो उसके विरुद्ध हो सकती है।

इसके विपरीत वैदिक धर्म के अनुसार परमात्मा ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों को ऋग्, यजु, साम, अथर्व चारों वेदों का ज्ञान दिया। उन्होंने ब्रह्मा को और ब्रह्मा ने आगे उनका प्रचार किया।

यहोवा परमेश्वर की अपेक्षा तो शैतान कहीं अधिक अच्छा है। वह मनुष्य का भला चाहता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। प्रशंसा ज्ञान देने वाली की होती है। अज्ञान के अंधेरे में रखने वाले की नहीं। अतः शैतान अधिक प्रशंसनीय है। उसने स्त्री से कहा–

बाइबल– "तुम निश्चय न मरोगे। सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।

तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं।"

उत्पत्ति 3/4,6,7 पृ. 41

समीक्षा– भला हो शैतान का, जिसने आदम और हव्वा को ज्ञान दिया, वरना वह अज्ञानी ही रह जाते। उन्हें यही पता न चलता कि वे नंगे हैं, शरीर ढकना चाहिए। यहोवा परमेश्वर झूठा भी है, क्योंकि उसने कहा था – फल खाओगे तो मर जाओगे। परन्तु खाने के बाद भी वे मरे नहीं।

2. बाइबल में कदाचार

यहोवा परमेश्वर कहता है–

बाइबल– "स्त्रीगमन की रीति से पुरुष गमन न करना, वह तो घिनौना काम है।"

लैव्यवस्था 18/22 पृ.170

समीक्षा– इतना होते हुए भी इस धर्मग्रन्थ में अप्राकृतिक मैथुन का संकेत मिलता है–

बाइबल– "और लूत को पुकार कर कहने लगे, कि जो पुरुष आज रात को तेरे पास आए हैं, वे कहां हैं ? उनको हमारे पास बाहर ले आ, कि हम उनसे भोग करें।"

उत्पत्ति 19/5 पृ. 24

समीक्षा– कैसा घृणित उपदेश है ? क्या इससे व्यक्ति चरित्र निर्माण की शिक्षा ले सकता है ? इसे पढ़ कर मनुष्य का मन कुत्सित ही होगा। अतः महर्षि मनु कहते है –

आचारः परमो धर्मः।। मनु 1/108

सदाचार ही परम धर्म है।

आचाराल्लभते ह्यायुः।। मनु 4/156

सदाचार से ही दीर्घायु प्राप्त होती है।

आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत्।। मनु 1/ 109

सदाचार से युक्त व्यक्ति को ही सम्पूर्ण सुख की प्राप्ति होती है।

सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम्।। मनु 1 /110

सारी तपस्याओं का मूल सदाचार को ग्रहण किया है।

खैर! बात यहीं समाप्त नहीं हो गई। लूत घर से बाहर निकला और कहने लगा–

बाइबल– "सुनो मेरी दो बेटियां हैं जिन्होंने अब लौं पुरुष का मुख नहीं देखा , इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास ले आऊं और तुमको जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो।"

उत्पत्ति 19/8 पृ. 24

समीक्षा– चाहिए तो यह था कि लूत उन पुरुषों की भी रक्षा करता और अपनी बेटियों की भी। यदि पुरुषों की रक्षा करने में असमर्थ था तो अपनी बेटियों की ही रक्षा करता,

उनका सतीत्व बचाए रखता और उन पुरुषों को वापस कर देता। क्योंकि उन्होंने उसकी बेटियों की मांग उनके बदले में नहीं की थी। इसके विपरीत वह अपनी बेटियों को ही देने के लिए तैयार हो गया। यह भी कुकर्म को बढ़ावा देना नहीं तो और क्या है ?

और इससे भी विचित्रता की तो बात यह है कि उन्हीं लूत की बेटियों ने अपने ही पिता से सन्तानोत्पत्ति की। एक दिन वह कहने लगीं–

बाइबल– "हम अपने पिता को दाखमधु पिला कर उसके साथ सोएं, जिससे कि हम अपने पिता के वंश को बचाए रखें। सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई। दूसरे दिन बड़ी बेटी ने छोटी बेटी से कहा, देख कल रात को मैं अपने पिता के पास सोई, सो आज भी रात को हम उसे दाखमधु पिलाएं, तू उसके साथ जाकर सोना। और छोटी बेटी उसके पास लेट गई। इस प्रकार दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं।

उत्पत्ति 19/32–36 पृ. 25

समीक्षा– कितना अभद्र एवं घृणित व्यवहार है बेटियों का अपने पिता के प्रति! उसी से गर्भवती हो गईं ? अर्थात् लूत अपनी बेटियों का भी पिता और बेटियों की सन्तानों का भी पिता ? है न हैरानी की बात ? क्या यह चारित्रिक पतन की चरमसीमा नहीं ? इससे अधिक नीच काम और क्या होगा ? इसीलिए मनु महाराज ने सावधान किया है –

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति ।। मनु 2/215

इन्द्रियां बड़ी बलवान् होती हैं। उनको रोकना विद्वान् के लिए भी कठिन है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि मां, बहन और बेटी के साथ भी एक आसन पर न बैठे अर्थात् एकान्त सेवन न करे।

अब आप ही सोचिए कि बाईबल पवित्र पुस्तक है या अपवित्र पुस्तक! बेटियों का अपने पिता के साथ किया गया कुकृत्य कितना धार्मिक है और कितना अधार्मिक ? पाठक स्वयं विचार करें। ऐसा ही वर्णन एक अन्य स्थान पर मिलता है –

बाइबल– "जो पुरुष तेरे घर आया, उसे बाहर ले आ, कि हम उससे भोग करें। घर का स्वामी उनके पास जाकर कहने लगा। देखो यहां मेरी कुंआरी बेटी है, और उस पुरुष की सुरैतिन भी है, उनको मैं बाहर ले आऊंगा और उनका पत पानी लो तो लो, और उनसे जो चाहो सो करो, परन्तु इस पुरुष से ऐसी मूढ़ता की बात मत करो। परन्तु उन मनुष्यों ने उसकी न मानी। तब उस पुरुष ने अपनी सुरैतन को पकड़ कर उनके पास बाहर कर दिया, और उन्होंने उससे कुकर्म किया। और रात भर क्या भोर तक

उससे लीला क्रीड़ा करते रहे। न्यायियों 19/22–25 पृ. 379,376

समीक्षा– इससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनके लिए चरित्र, सदाचार, मान–मर्यादा आदि का कुछ भी मूल्य नहीं है। इससे अधिक चरित्र का पतन और क्या हो सकता है ? ऐसे कामान्ध व्यक्तियों के बारे में कितना सटीक कथन है–

दिवा पश्यति नोलूकः काको नक्तं न पश्यति।

कामान्धो जनस्तु दिवानक्तं न पश्यति ।।

उल्लू दिन में नहीं देखता। कौआ रात में नहीं देखता। परन्तु कामान्ध व्यक्ति न दिन में देखता है और न ही रात में देखता है।

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।। मनु 4 /157

दुराचारी पुरुष सर्वत्र निन्दा का पात्र होता है।

3. भेदभाव का जनक यहोवा परमेश्वर

यहोवा परमेश्वर सभी मनुष्यों को समान दृष्टि से भी नहीं देखता। उसके मन में स्वयं भेदभाव विद्यमान है। इस्राएलियों के प्रति उसका व्यवहार अत्यंत क्रूर है। वह स्वयं कहता है–

बाइबल– "पर इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या मनुष्य, क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भोंकेगा, जिससे तुम जान लो मिस्रियों और इस्रायलियों में मैं यहोवा अन्तर करता हूं।" निर्गमन 11/7 पृ. 96

समीक्षा– जब परमेश्वर स्वयं ही भेदभाव करता है तो उसकी संतान भला भेदभाव क्यों नहीं करेगी ? दूसरे, पशु पक्षियों ने भला यहोवा का क्या बिगाड़ा था जो उन पर इतनी नाराजगी प्रकट कर रहा है ?

4. असहिष्णु यहोवा परमेश्वर

वस्तुतः यहोवा असहनशील है। उसमें बस अपनी ही पूजा कराने की धुन है। उसके राज्य में अन्य देवी देवताओं के उपासक नहीं रह सकते–

बाइबल– "मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके पराए देवताओं की, वा सूर्य, वा चन्द्रमा, वा आकाश के गण में से किसी की उपासना की हो वा उसको दण्डवत् किया हो, और यह बात मुझको बतलाई जाये जिस पुरुष वा स्त्री ने ऐसा बुरा काम किया हो, उस

समीक्षा– ईश्वर की इस आज्ञा को सुनकर या पढ़कर भला ईसाई दूसरे देवी देवताओं के उपासकों को किस तरह सहन करेंगे ? उनके राज्य में गैर–ईसाइयों का रहना तो और भी दूभर हो जाएगा। इसीलिए जहाँ–जहाँ अंग्रेजी शासन फैला वहीं वहीं लोगों को छल, कपट और शक्ति के बल पर ईसाई बना लिया। इसके लिए **म.प्र. की नियोगी रिपोर्ट** को विस्तार से देखा जा सकता है।

और भी देखिए, यहोवा परमेश्वर दूसरे देवी देवताओं के उपासकों पर कैसे क्रोधित होता है–

बाइबल– "इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया और अपने परमेश्वर यहोवा को भूल कर बाल नाम देवताओं और अशेरा नाम देवियों की उपासना करने लग गए तब यहोवा का क्रोध इस्राएलियों पर भड़का ।" न्यायियों 3/7 पृ. 345

यहोवा परमेश्वर कहता है–

बाइबल– " देखो, मैं इस देश के सब रहने वालों को विशेष करके दाऊदवंश की गद्दी पर विराजमान राजा और याजक और भविष्यवक्ता आदि येरुशलेम के सब निवासियों को अपनी कोपरूपी मदिरा पिला कर अचेत कर दूंगा। तब मैं उन्हें एक दूसरे से टकरा दूंगा अर्थात् बाप को बेटे से और बेटे को बाप से, यहोवा की यह वाणी है। मैं उन पर कोमलता नहीं दिखाऊँगा, न तरस खाऊँगा और न दया करके उनको नष्ट होने से बचाऊंगा।"

यिर्मयाह 13/13, 14 पृ. 1091

समीक्षा – कितना भयंकर है परमेश्वर का क्रोध! शान्ति का तो उसमें नामोनिशान ही नहीं। धर्मभीरू जनता के लिए इतनी ही धमकी काफी है। शायद इस धमकी से वह दूसरे देवी देवताओं की उपासना न करें। यहोवा परमेश्वर धमकी देते हुए आगे कहता है–

5. प्रतिमा भंजक यहोवा परमेश्वर

बाइबल – "प्रभु यहोवा पहाड़ों और पहाड़ियों से, और नालों और तराइयों से कहता है, देखो, मैं तुम पर तलवार चलवाऊंगा और तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थानों का नाश करूंगा। तुम्हारी **वेदियाँ उजड़ेंगी** और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएं तोड़ी जाएंगी।"

यहेजकेल 6/3, 4 पृ.1174

समीक्षा–क्या पहाड़ और पहाड़ियां, नाले और तराईयां भी सुनते हैं ? क्या वे प्राणी हैं जो सुनेंगे ? संभवतः प्रभु यहोवा को यह भी ज्ञान नहीं कि ये निर्जीव हैं। भला उसके शब्दों का इन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? तलवार चलाने की उन्हें धमकी दे रहा है। कहां तलवार और कहां ये बड़े–बड़े पहाड़–पहाड़ियां ? उन पर तलवार कैसे चलाएगा ? यहोवा वेदियां उजड़ने और **सूर्य की प्रतिमाएं** तोड़ने की भी धमकी दे रहा है। जब

यहोवा परमेश्वर ही वेदियां उजाड़ने और प्रतिमाएं तोड़ने लगे तो ऐसे ईश्वर को आप क्या कहेंगे ? स्वयं सोचें ! इतना होने पर भी –

यहोवा अपनी इन धमकियों तथा दण्डों से भी लोगों को पूर्णरूपेण प्रभावित न कर सका और बहुत से मनुष्य दूसरे देवी देवताओं को मानते रहे –

बाइबल–"शूद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, हे बबूक दनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हमको उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है, वरन् हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। परन्तु यदि नहीं, तो हे राजा, तुझे मालूम हो , कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे।"

दानियेल 3/16–18 पृ. 1251

समीक्षा – इससे प्रतीत होता है कि ईसाईयों में भी मूर्तिपूजा प्रचालित रही है।

6. विष्ठा की रोटियां

मनुष्य की विष्ठा या गोबर से बनी रोटियां भला कौन खाएगा! सूअर ही विष्ठा खाता फिरता है और गोबर तो कोई भी नहीं खाता। पर धन्य हो बाइबल का! जिसमें विष्ठा की रोटियां बनाने, खाने का उपदेश दिया गया है –

बाइबल–"अपना भोजन जव की रोटियों की नाईं बना कर खाया करना और उसको मनुष्य की विष्ठा से उसके देखते बनाया करना।"

"मैंने तेरे लिए मनुष्य की सन्ती गोबर ठहराया है और उसी से तू अपनी रोटी बनाना।"

यहेजकल 4/12, 15 पृ. 1173

समीक्षा– यदि सारे ईसाई ऐसी ही रोटियां खाने लग जाएं तो बाकी अन्य धर्मावलम्बियों को अन्न की रोटी सरलता से सुलभ हो जाएगी और खाद्य समस्या का समाधान आसान हो जाएगा। सरकार की सिरदर्दी मिट जाएगी। क्या ईसाई विष्ठा की रोटियां खाने को तैयार हैं ? यदि नहीं, तो यह बाइबल की आज्ञा का उल्लंघन होगा।

7. मदिरा पिलाने का उद्देश्य

और भी देखिए, मदिरा पिलाने का उद्देश्य भी बड़ा विचित्र है–

बाइबल– "मदिरा उसको पिलाओ जो मरने पर है, और दाखमधु उदास मन वालों को देना। जिससे वे पीकर अपनी दरिद्रता भूल जाएं। और अपने कठिन श्रम फिर स्मरण न करें।"

नीति वचन 31/6,7 पृ. 968

समीक्षा– देखा आपने, कैसा सुन्दर नुस्खा है दरिद्रता, उदासी और कठिन परिश्रम दूर करने का ?

किसी ने ठीक ही कहा है–

पीने वालों को पीने का बहाना चाहिए।

वरना कहीं शराब पीने से उदासी और दुःख दूर होते हैं। यदि मदिरापान से दुःख दूर होते तो महात्मा तुलसीदास यह न कहते–

ग्रहगृहीत पुनि वातवश, तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पियाइय वारुणी, कहहु कौन उपचार।।

रामचरितमानस अयो.177 पृ. 436

जिसको कठिन ग्रह लगे हैं, पुनः सन्निपात रोग के वश है, तिस पर बिच्छू ने काट खाया अर्थात् डंक मार दिया। यदि उसके दुःख को दूर करने के लिए उसे मदिरा पिला दी जाए तो क्या यह उसका सही उपचार होगा अर्थात् नहीं।

8. शान्ति का दूत ईसा !

ईसा को शान्ति का दूत कहा जाता है, बड़े–बड़े गीत उसकी प्रशंसा में गाए जाते हैं। परन्तु वास्तव में वह शान्ति की स्थापना के लिए आया ही नहीं था। ईसा का स्वयं कहना है –

बाइबल– ''यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं। मैं मिलाप कराने नहीं पर तलवार चलाने आया हूं। मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। मनुष्य के वैरी उसके घर के लोग ही होंगे।''

नया नियम मत्ती 10/34–36 पृ.14–15

और भी देखिए –

बाइबल –''मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ, और क्या चाहता हूँ, केवल यह कि अभी सुलग जाती। क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूँ ? मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं, वरन् अलग कराने आया हूँ। क्योंकि अब से एक घर में पाँच जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो से और दो तीन से। पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा, मां बेटी से और बेटी माँ से, सास बहू से और बहू सास से विरोध रखेगी।''

लूका 12/49–53 पृ. 104

समीक्षा– बाइबल के इन वचनों से क्या ईसा का शान्ति दूत होना सिद्ध होता है ?

वह तो बहुत बड़ा विघटक है, पारिवारिक कलह का जन्मदाता है, समाज और परिवार का विध्वंसक है।

परन्तु वेद कहता है –

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।

सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।। अथर्व, 3/30/3

भाई, भाई के साथ और बहन, बहन के साथ तथा भाई, बहन के साथ परस्पर द्वेष न करे। तुम्हें चाहिए कि एक मन वाले होकर समान आदर्शों का अनुसरण करते हुए परस्पर प्रेम बढ़ाने वाली वाणी का व्यवहार करो।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।।

अथर्व, 3/31/2

पुत्र माता–पिता की आज्ञा के अनुकूल चलने वाला हो। उनके साथ एक मन वाला होकर रहे। पत्नी अपने पति के प्रति मधुर और स्नेहयुक्त वाणी का व्यवहार करे। उसी प्रकार पति भी पत्नी के प्रति मधुर और स्नेहयुक्त व्यवहार करे।

देखा आपने, कहां बाइबल का विघटन का उपदेश और कहां वेदों का सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ पारिवारिक एकता, सौहार्द और साहचर्य का संदेश !

9. स्वर्ग की राह

स्वर्ग प्राप्ति का रास्ता देखिए। बाइबल कहती है कि कोई धनवान् स्वर्ग को नहीं जाएगा। अतः जितने धनी ईसाई देश या धनी ईसाई व्यक्ति हैं वे सोच लें कि उन्हें स्वर्ग जाना है या नरक ?

बाइबल– "यीशू ने अपने चेले से कहा– मैं तुमसे सच कहता हूँ कि धनवान् का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कठिन है। फिर तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर के राज्य में धनवान् के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नोक से निकल जाना सहज है।

मत्ती 19/23,24 पृ. 29

समीक्षा– स्वर्ग जाने का मापदण्ड क्या है ? यह ईसा ने स्पष्ट नहीं किया। क्या निर्धन सारे स्वर्ग चले जाएंगे ? चाहिए तो यह था कि ईश्वर कर्मों के अनुसार स्वर्ग नरक देता। किन्तु उसने स्वर्ग प्राप्ति का मापदंड भी आर्थिक आधार पर रखा। यह विचारणीय है ।

क्या सच्चे, ईमानदार, परोपकारी, ईश्वरभक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ धनिक व्यक्ति भी स्वर्ग नहीं जाएंगे ? यह तो उनके प्रति सरासर अन्याय होगा।

10. नारी का अपमान

बाईबल स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा हीन समझती है। समानता का अधिकार प्रदान नहीं करती। अपितु उसे मनुष्य की अधीनता में रहने का उपदेश देती है–

बाइबल– "मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए परन्तु चुपचाप रहे।" तीमुथियूस 2/12, पृ. 301

समीक्षा– कहां गया ईसाईयों का समानता का अधिकार ? ईसाई तो अपने को सभ्य और संस्कृत समझते हैं परन्तु बाईबल से ऐसा नहीं लगता।

इससे यह भी सिद्ध है कि ईसाई बाइबल की आज्ञा को नहीं मानते। क्योंकि अनेक महिलाएं 'नन' के रूप में कार्य कर रही हैं। मदर टेरेसा भी उपदेशिका थीं। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनका स्थान ग्रहण करने वाली भी महिला ही है। अनेक महिलाएं स्कूल, कॉलेज, मेडिकल कॉलेज आदि संस्थाओं के माध्यम से कार्य कर रही हैं। इन्हें भी तो बाइबल की आज्ञा का उल्लंघन करने पर दण्डित करना चाहिए था। महारानी एलिजाबेथ को राजगद्दी पर कैसे बिठा दिया गया ? वे चुपचाप घर में बैठतीं ।

जहां बाइबल महिलाओं को घर में बन्द रखना चाहती है वहां वैदिक धर्म शिक्षा का समान अधिकार देता है। महर्षि दयानन्द कहते हैं –

"वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण शत्रु हैं कि जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई।" स.प्र.समु. 2

"आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की शाला में भेज देवें।"

"इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें और आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के, लड़कियों को घर में न रख के, पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे, वह दण्डनीय हो।" स.प्र.समु. 3

वेद कहता है –

स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ।। ऋ. 8/33/19

निश्चय ही स्त्री वेदवेत्ता, यज्ञ की ब्रह्मा और पूज्या हो सकती है।

11. पवित्र होने की विधि

बाइबल में पवित्र होने की विधि भी देखिए –

"जब बकरों, बैलों का लहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र करती है।"

इब्रानियों 9/13 पृ. 321

और भी देखिए–

"तब उस मेढ़े को बलि करना और उसके लहू में से कुछ हारुन और उसके पुत्रों के दाहिने कान के सिर पर और उनके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अंगूठे पर लगाना और लहू को वेदी पर चारों ओर छिड़क देना फिर वेदी के लहू और अभिषेक के तेल इन दोनों में से कुछ कुछ लेकर हारुन और उसके वस्त्रों पर और उसके पुत्रों और उसके वस्त्रों पर भी छिड़क देना, तब वह अपने वस्त्रों समेत और उसके पुत्र भी अपने – अपने वस्त्रों समेत पवित्र हो जाएंगे।"

निर्गमन 29 / 20,21 पृ.124

समीक्षा – **है न विचित्र तरीका! टोने, टोटके और अंधविश्वास से भरा हुआ ! आज तक किसी ने भी पवित्र होने के लिए ऐसा तरीका अपनाया न होगा। सोचिए, जब शरीर पर खून छिड़का जायेगा तो वह पवित्र किस प्रकार होगा ? उस व्यक्ति पर चारों ओर से मक्खियां भिनभिनाने लगेंगी। दुर्गन्ध भी आयेगी। वस्तुतः शरीर की शुद्धि तो साफ पानी से स्नान करने से होती है।**

मनु महाराज कहते हैं –

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति।। मनु. 5 / 109

जल से शरीर के अंग शुद्ध होते हैं। पवित्रता की यह कितनी सुन्दर विधि है।

12. अहिंसा और प्रेम का पुजारी ईसा !

एक ओर तो ईसा को अहिंसा और प्रेम का पुजारी कहा जाता है तो दूसरी ओर पशु पक्षियों को मार कर बलि देने का बाइबल में समर्थन किया गया है। ईसा ने बाइबल की इस बात को कैसे स्वीकार कर लिया ? उसे तो इसका खंडन करना चाहिए था। देखिए यहोवा परमेश्वर स्वयं होम बलि को स्वीकार करता है –

13. पशुबलि

बाइबल – "तब नूह ने यहोवा के लिए वेदी बनाई और सब शुद्ध पशुओं और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ–कुछ लेकर होमबलि चढ़ाया। इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर.................।"

उत्पत्ति 8 / 20, 21 पृ.11

समीक्षा – जरा सोचिए–मांस, हड्डी, चर्बी आदि के जलाने से सुगन्ध पैदा होती है या दुर्गन्ध ? यहोवा इस वास्तविकता को समझने में भी असमर्थ रहा है। साथ ही जहां परमेश्वर पशुबलि से प्रसन्न होता है वहां नरबलि के लिए भी प्रेरित करता है–

14. नरबलि

बाइबल – "परमेश्वर ने, इब्राहीम से यह कह कर उसकी परीक्षा ली कि हे इब्राहीम! उसने कहा, देख, मैं यहां हूँ। उसने कहा, अपने पुत्र को अर्थात् इकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम करता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो तुझे बताऊंगा, होमबलि करके चढ़ा।"

उत्पत्ति 22/1–2, पृ.28

समीक्षा – जीवों पर दया का कहीं नामोनिशान भी नहीं दृष्टिगोचर होता।

वैदिक धर्म का सिद्धांत इसके विपरीत है। होम अर्थात् यज्ञ को **"अध्वर"** भी कहते हैं–

अध्वरो वै यज्ञः।। शत 3/6/3/10

हिंसा रहित कर्म ही यज्ञ है।

अध्वरः ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः।।

'ध्वर' का अर्थ है– हिंसा कर्म। जिस यज्ञ कर्म में हिंसा न हो, वह **अध्वर** है। यह है वैदिक धर्म की विशेषता। जहां यज्ञ में हिंसा का निषेध है।

आरे ते गोघ्नमुत पूषघ्नं क्षयद्–वीर।।

हे शत्रुओं के विनाशक वीर! गो हत्यारे दुष्टों को हमसे दूर रखो।

15. पाप कर्म से मुक्ति ?

यदि आपने कोई पाप कर्म किया है तो प्रायश्चित के लिए बलि कीजिए और पाप से छुटकारा पाइए। कितना अच्छा उपाय है ! करे कोई– भरे कोई ! पाप मनुष्य करे और जान से हाथ धोना पड़े पशुओं को। तभी तो यह कहावत बन गई –

" चिड़ी जाए अपनी जान से और खाने वालों को स्वाद न मिले। "

बाइबल –पाप बलि को एक बछड़ा प्रतिदिन चढ़ाना और वेदी को भी प्रायश्चित करने के समय शुद्ध करना, ... और जो कुछ उससे छू जाएगा वह भी पवित्र हो जाएगा।"

निगर्मन 29/36,37 पृ.125

वैदिक धर्म के अनुसार अच्छा बुरा कर्मफल अवश्य भोगना पड़ता है –

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाभम्।।

रोगों को दूर करने के लिए भी बड़ी अजीबोगरीब विधि बताई गई है –

16. कुष्ठ रोग का अजीबोगरीब इलाज

लैव्यवस्था 14, पृष्ठ 161 में कोढ़ी को शुद्ध करने के लिए भी पक्षी की बलि जल में करने के लिए कहा गया है और फिर पशुबलि के लिए आदेश दिया गया है। इस नियम से कोढ़ी कहां तक शुद्ध हो जायेंगे यह तो वही शुद्धकर्ता याजक अधिक जानते होंगे

या वे कोढ़ी, जो कोढ़ से शुद्ध हुए होंगे।

समीक्षा – ऐसे कारगर (!) नुस्खे के सम्मुख CMC लुधियाना आदि को अपना कुष्ठ रोग विभाग तुरन्त बंद कर देना चाहिए। इतने भारी भरकम खर्चे की क्या आवश्यकता? कुष्ठ रोग का इलाज तो बाइबल ने बता ही दिया। फाजिल्का में भी कुष्ठ आश्रम है। इसके रोगियों की खबर क्यों नहीं ली गई? क्या ही अच्छा होता इनका भी उद्धार कर देते। आज के वैज्ञानिक युग में भी भोली भाली जनता को पता नहीं क्यों धोखा दे रहे हैं ? **बस** यही न ! कि ईसाई बन जाएं। रोग ठीक हो चाहे न हो।

प्रमेह रोगी के लिए रोग ठीक होने के बाद भी बलि आवश्यक है –

बाइबल – "आठवें दिन वह पंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सम्मुख जाकर उन्हें याजक को दे दें।
तब याजक उनमें से एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि के लिए उसके प्रमेह के कारण यहोवा के सामने प्रायश्चित करे।"

लै व्यवस्था 15/14–15 पृ. 165

समीक्षा – रोग प्रमेह का और बलि बेकसूर पक्षियों की! कैसा सुन्दर समाधान है ? ऐसी तीव्र बुद्धि की क्या स्तुति करें! ऐसा न्याय भला और कहां मिलेगा ? मोटा फांसी के फंदे पर नहीं आता तो पतले को चढ़ा दें! यह तो साक्षात् " अन्धेर नगरी चौपट राजा " नहीं तो और क्या है ?

17. लाखों पशुओं की बलि

सैंकड़ों एवं हजारों की संख्या में पशुबलि अपने आप में एक आश्चर्य है। जो पशु दूध एवं कृषि का आधार रहे हों उनको इस प्रकार मार देना तो अपराधपूर्ण कृत्य ही माना जाएगा। वैसे भी उस समय तो बैलों से ही खेती होती थी। फिर इतनी बड़ी संख्या में मार देना अवश्य ही चिन्ता का विषय है –

बाइबल – " जो पशु सुलेमान ने यहोवा को चढ़ाए, **बाइस हजार बैल** और एक लाख **बीस हजार भेड़ें** थी।"

राजा प्रथम 8/62–63 पृ. 500

"वे सब संदूक के सामने इतनी भेड़ और बैल बलि कर रहे थे, जिनकी गिनती किसी रीति से नहीं की जा सकती थी।"

राजा प्रथम 8/5 पृ. 497

समीक्षा – यहोवा परमेश्वर को प्रसन्न करने का भला इससे अच्छा उपाय और क्या

हो सकता है ? धन्य है ईसाइयों का परमेश्वर यहोवा! जो पशु पक्षियों की बलि से प्रसन्न होता है। बेचारे पशु पक्षियों ने क्या बिगाड़ा था जो उनकी बलि दी गई ? " **जियो और जीने दो** " का सिद्धान्त कहां गया ? क्या उन्हें जीने का अधिकार नहीं? शान्ति का दूत कहे जाने वाले ईसा ने इसके विरुद्ध आवाज क्यों नही उठाई ? मनु महाराज ने मारने, पकाने, खाने वालों को हत्यारा कहा है–

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः।। मनु 5/51

मारने की अनुमति देने वाला, अंगों को काट कर अलग–अलग करने वाला, मारने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला ये आठ घातक अर्थात् हत्यारे हैं।

महर्षि दयानन्द कहते हैं –

उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात्.............वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दें।

स.प्र.समु.10

वैसे हाथी, घोड़े, ऊंट , गदहे, आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानियेगा।

स.प्र.समु. 10

जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं को मारने वाले मांसाहारी राज्याधिकारी हुए हैं, तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ोतरी होती जाती है। स.प्र.समु.10

मांसाहारिणः कुतो दया।। मांसाहारियों में दया कहां?

जब ईसाइयों का ईश्वर मांसाहारी है तो उसको दया का क्या काम है?

स.प्र.समु.13

मांसाहार का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस पर **महर्षि दयानन्द** कहते हैं –

उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।

स.प्र.समु. 10

पशुओं को मारो और ईश्वर को प्रसन्न करो – यह सिद्धान्त बाइबल का है। इसके विपरीत **वेद कहता है–**

पशून् पाहि।। यजु.1/1

पशुओं की रक्षा करो।

गौ को वेद में "**अघ्न्या**" अर्थात् अवध्य कहा गया है जिसका अर्थ है – न मारने योग्य।

देखो ! गौ को वेद में अवध्य रूप में नमस्कार किया गया है–

रूपायाघ्न्ये ते नमः।। अथर्व. 10/10/1

हे अघ्न्ये (अवध्य) गौ! तेरे स्वरूप को प्रणाम है।

अघ्न्या इति गवां नाम क एतां हन्तुमर्हति।

महच्चकाराकुशलं वृषं गां वा लभेत तु यः।। म. भा. शान्ति. 262/47

श्रुति अर्थात् वेद में गौ को **अघ्न्या** कहा है। ऐसी स्थिति में कौन उन्हें मारने का प्रयास करेगा ? जो पुरुष गाय और बैलों को मारता है, वह महान् पाप करता है।

गां मा हिंसीः।। यजु. 13/43

गाय को मत मारो।

इसी प्रकार भैंस, भेड़, बकरी, घोड़ा, गधा आदि पशुओं को मारने का भी निषेध है।

18. वेद में सभी के कल्याण की कामना

गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनूबलम्।। अथर्व. 9/4/20

हमारे राष्ट्र में गौएं होवें, प्रजाएं होवें और सभी में शारीरिक बल भी होवे।

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते।

तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः।। अथर्व. 11/2/9

सुख उत्पादक परमेश्वर को चार बार, आठ बार नमस्कार है। हे पशुपते! अर्थात् पशुओं के रक्षक स्वामी ! तुझे दस बार नमस्कार है। विभिन्न योनियों में विभाजित ये पांच प्रकार के प्राणी– गौवें, घोड़े, पुरुष, बकरियां और भेड़े हैं।

19. पशुहिंसकों के लिए दण्डविधान

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।

तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा।। अथर्व. 1/17/4

यदि हमारी गाय को, घोड़े को, पुरुष को तू मारता है या मारेगा तो उस मारने वाले तुझको हम सीसे की गोली से मार देंगे। जिससे तू हमारे इन पशुओं और वीरों का नाश करने वाला न होवे।

नोट – प्रस्तुत पुस्तक के समस्त उद्धरण भारत लंका बाईबल समिति, ए/1, महात्मा गांधी मार्ग, बंगलोर–1 से प्रकाशित बाइबल से उदधृत हैं।

20. अहिंसा की महत्ता

योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया।

स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित् सुखमेधते।। मनु. 5/45

जो अपने सुख की इच्छा से निरपराध जीवों को मारता है, वह जीता हुआ भी मुर्दा है। क्योंकि जो दूसरे प्राणियों के दुःख का अनुभव नहीं कर सकता , वह कहीं सुख को नहीं पाता।

यो बन्धन–वध–क्लेशान् प्राणिनां न चिकीर्षति।

स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ।। मनु. 5/46

जो प्राणियों को कैद करने, मारने या पीड़ा देने की इच्छा नहीं करता, वही सबका हितचिन्तक है और अत्यधिक सुख प्राप्त करता है।

यद् ध्यायति यत् कुरुते धृतिं बध्नाति यत्र च।

तदवाप्नोत्ययत्नेन यो हिनस्ति न किंचन।। मनु. 5/47

जो किसी को भी नहीं मारता, वह सुगमता से ही उस समस्त वस्तु को प्राप्त कर लेता है – जिस पर ध्यान लगाता है या जो काम करता है या जिसमें दृढ़ता से मन लगाता है।

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित्।

न च प्राणिवधः स्वर्ग्यः तस्मान्मांसं विवर्जयेत्।। मनु. 5/48

प्राणियों की हिंसा किए बिना मांस कहीं नहीं मिलता और प्राणियों का वध स्वर्ग देने वाला नहीं है। अतः मांस को सवर्था त्याग दे।

समुत्पत्तिं च मांसस्य वधबन्धौ च देहिनाम्।

प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात्।। मनु. 5/49

मांस के पैदा होने की रीति तथा प्राणियों की हत्या और पीड़ा को देखकर सभी मांस भक्षण से बचे रहें।

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः।। मनु. 5/51

जिसकी सम्मति और सहमति से मारते हैं, जो अंगों को काट कर अलग–अलग करता है, मारने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला – ये आठ घातक अर्थात् हत्यारे हैं।

**

पढ़ो वेद का ज्ञान

वेद प्रकाश शास्त्री

पढ़ कर वेद का ज्ञान, मिटा लो अज्ञान – अरे नादान ।।
अग्नि, वायु थे ऋषि महान् , आदित्य, अंगिरा हुए विद्वान्।
मिला उन्हें प्रथम वेद का ज्ञान, पढ़ लो वेद का ज्ञान–अरे नादान।। 1।।
आदि ग्रन्थ है वेद कहाता, ब्रह्मज्ञान और मुक्ति का दाता ।
अन्य पथ का मत करो गुमान, पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 2।।
ईश्वर है सृष्टि रचता , भोगी जीव कर्म है करता ।
प्रकृति है भोग्य निधान, पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 3।।
वेदों में कोई इतिहास नहीं है, जादू – टोना औ बकवास नहीं है।
देखो भरा पड़ा है सद्ज्ञान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे नादान।। 4।।
सायण ने कितना अनर्थ किया, महीधर–उव्वट ने अनुचित अर्थ किया।
दयानन्द ने दिया सही अर्थ का ज्ञान,पढ़ लो वेद का ज्ञान–अरे नादान।।5।।
वेदभाष्य का नवयुग आया, दयानन्द ने है सत्पथ दिखलाया ।
आया देखो कैसा स्वर्ग विहान,पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे नादान।। 6।।
समता का है यह पाठ पढ़ाता, नहीं भेदभाव से रखता नाता।
सर्वहित बना एक विधान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे नादान।। 7।।
दयानन्द का नाद यही है, सत्यज्ञान का स्रोत यही है ।
सद्गुण की है यह खान, पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 8।।
संस्कारों की है महिमा गाता, है सबके कर्त्तव्य सदा बताता।
सुख पावो इनकी गरिमा जान, पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 9।।
सार चतुर्वेद का है गायत्री, यही कहाती है सावित्री ।
इससे नहीं पावक छन्द महान् ,पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 10।।
प्रभु का नाम गुणों के अनुरूप, वह सत् चित् आनन्दस्वरूप।
प्रमुख ओम् नाम को जान, पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 11।।
परमेश्वर का है रूप निराकार, कभी न लेता वह अवतार।
घट–घट में उसको व्यापक जान,पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 12।।
पापों से वह बिंधा नहीं है, विकारों से वह भरा नहीं है।
'वेद' ने किया यही बखान, पढ़ लो वेद का ज्ञान –अरे नादान।। 13।।